ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशु चिकित्सा में होम्योपैथी

डॉ. आशा[1], डॉ. पूजा[2], डॉ. रवि डबास[3] एवं डॉ. प्रत्यांशु श्रीवास्तव[4]

[1]नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, 482001

[2,4]पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान, दुवासु, मथुरा, उत्तर प्रदेश, 281001

[3]भाकृअनुप - भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली, उत्तर प्रदेश, 243122

हालांकि होम्योपैथी को पिछले 200 सालों से एक वैकल्पिक उपचार के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है, लेकिन वैज्ञानिक शोध ने अभी तक इसकी प्रभावशीलता का समर्थन नहीं किया है। पारंपरिक चिकित्सा के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अलग, यह "समान चीज़ें समान बीमारियों को ठीक करती हैं" के सिद्धांत पर आधारित है और इसमें बहुत पतले प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग किया जाता है, जिसे आमतौर पर वैज्ञानिक रूप से सही नहीं माना जाता। होम्योपैथी का उपयोग अक्सर जानवरों में पुरानी बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है और हाल के समय में इसे जैविक खेती में भी अपनाया जा रहा है। लेकिन पशु चिकित्सा में होम्योपैथी के उपयोग पर बहुत कम वैज्ञानिक शोध प्रकाशित हुए हैं। इसके प्रभाव को लेकर विरोधाभासी नतीजे सामने आए हैं, जो अलग-अलग शोध तरीकों के कारण हो सकते हैं। होम्योपैथी के उपयोग को समर्थन देने वाले शोध के नतीजे आमतौर पर शोध की गुणवत्ता से जुड़ी समस्याओं का संकेत देते हैं। वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित पशु चिकित्सा में साक्ष्य-आधारित निदान और उपचार की जरूरत होती है, और होम्योपैथी संभावित शोध गलतियों को समझने के लिए एक अच्छा शिक्षण माध्यम हो सकता है।

मुख्य शब्द: होम्योपैथी, जर्मनी, खुराक, समानता

परिचय

होम्योपैथी एक अनोखी चिकित्सा पद्धति है, जिसकी शुरुआत 18वीं शताब्दी में जर्मनी में हुई और बाद में यह यूरोप, भारत, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अमेरिका, अमेरिका और कनाडा जैसे देशों में फैल गई। इसका आधार जर्मन डॉक्टर सैमुअल हैनीमैन द्वारा 18वीं शताब्दी के अंत में पेश किए गए विचारों पर है, जिन्होंने होम्योपैथी की खोज की थी। इस 200 साल पुरानी चिकित्सा प्रणाली का मुख्य सिद्धांत "समानता का नियम" है, जिसे "सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटुर" यानी "समान को समान से ठीक किया जा सकता है" के रूप में भी जाना जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार, किसी रोगी का इलाज उस दवा से किया जा सकता है, जो स्वस्थ व्यक्ति में भी समान लक्षण पैदा करती है। जानवरों की विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के इलाज में भी इस सिद्धांत के अनुसार बहुत पतली दवाओं का उपयोग किया जाता है, जिसे पशु चिकित्सा में होम्योपैथी कहा जाता है। भले ही यह मूल रूप से मानव रोगियों के इलाज के लिए बनाई गई थी, लेकिन इसके जनक सैमुअल हैनीमैन ने 1815 में यह भविष्यवाणी की थी कि इससे जानवरों को भी फायदा होगा। हालांकि, पशु चिकित्सा में होम्योपैथी पर कम शोध हुआ है और इस पर बहुत कम शोधपत्र प्रकाशित हुए हैं।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

होमियोपैथी क्या है?

होम्योपैथी एक चिकित्सा प्रणाली है जो समानता के सिद्धांत पर आधारित है। इसका मतलब है कि जो पदार्थ सामान्य खुराक में कुछ लक्षण या समस्याएँ पैदा करता है, वही पदार्थ बहुत छोटे और विशेष रूप से तैयार किए गए रूप में उन लोगों में इन्हीं लक्षणों का इलाज कर सकता है। "होम्योपैथी" शब्द ग्रीक शब्दों "होमियोस" (समान) और "पैथोस" (पीड़ा या बीमारी) से लिया गया है। होम्योपैथी में, जानवर के दिखाए गए लक्षणों के आधार पर दवा चुनी जाती है ताकि उपचार प्रतिक्रिया शुरू हो सके। पारंपरिक चिकित्सा में, लक्षणों को बीमारी का हिस्सा मानकर उन्हें दबाने या खत्म करने की कोशिश की जाती है। लेकिन होम्योपैथी में, लक्षणों को बीमारी का संकेत माना जाता है, न कि बीमारी खुद। जैसे कार की कम तेल की चेतावनी लाइट को बंद करने से तेल की समस्या ठीक नहीं होती, वैसे ही लक्षणों को दबाने से बीमारी का असली कारण ठीक नहीं होता। इसलिए, होम्योपैथी का लक्ष्य लक्षणों के अनुसार व्यक्तिगत रूप से उपयुक्त दवा ढूँढ़कर बीमारी का गहरा और स्थायी इलाज करना होता है।

होमियोपैथी का इतिहास:

होम्योपैथी की शुरुआत 18वीं सदी के अंत में हुई और यह जर्मन डॉक्टर सैमुअल हैनीमैन के काम से जुड़ी है। हैनीमैन उस समय की कठोर चिकित्सा पद्धतियों से असंतुष्ट थे, जिनमें अक्सर रक्तपात और विषाक्त दवाओं का उपयोग होता था। एक बार उन्होंने मलेरिया के इलाज के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सिनकोना छाल के बारे में पढ़ा और इसकी प्रभावशीलता पर सवाल उठाया। खुद पर इसका परीक्षण करके उन्होंने देखा कि इससे मलेरिया जैसे लक्षण उत्पन्न होते हैं। इससे उन्हें "जैसे इलाज वैसे" के सिद्धांत का विचार आया, जो होम्योपैथी का मुख्य आधार है।

1810 में, हैनीमैन ने "ऑर्गनॉन ऑफ़ द रेशनल आर्ट ऑफ़ हीलिंग" नामक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें होम्योपैथी के सिद्धांतों को समझाया गया, जैसे समानता का नियम, सूक्ष्म खुराक का नियम, और व्यक्तिगत इलाज। उन्होंने अपने अनुयायियों के साथ कई पदार्थों के प्रभावों का परीक्षण किया और उनके नतीजों को "मटेरिया मेडिका पुरा" में इकट्ठा किया, जिसमें होम्योपैथिक दवाओं से जुड़ी जानकारी दी गई थी।

1828 में, लीपज़िग, जर्मनी में पहला होम्योपैथिक स्कूल खोला गया, जिसने इस चिकित्सा पद्धति को सिखाने और फैलाने में अहम भूमिका निभाई। संयुक्त राज्य अमेरिका में, होम्योपैथी को हैनीमैन के छात्र हैंस बर्च ग्राम ने 1825 में न्यूयॉर्क में पेश किया। 1835 में, पहला होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज पेनसिल्वेनिया में स्थापित हुआ।

हैनीमैन ने अपनी पुस्तक "ऑर्गनॉन ऑफ़ द हीलिंग आर्ट" का संशोधित संस्करण भी जारी किया, जो होम्योपैथिक चिकित्सा के लिए मानक पुस्तक बन गई। 19वीं शताब्दी में, होम्योपैथी यूरोप, अमेरिका और अन्य जगहों पर लोकप्रिय हुई। कई होम्योपैथिक अस्पताल, क्लीनिक और फ़ार्मेसी खोले गए।

हालाँकि, 19वीं शताब्दी के अंत में, आधुनिक चिकित्सा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण होम्योपैथी की लोकप्रियता में गिरावट आई। 20वीं शताब्दी में भी इसे चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन फिर भी इसका अभ्यास जारी रहा। हाल के दशकों में वैकल्पिक चिकित्सा में बढ़ती रुचि के कारण होम्योपैथी की लोकप्रियता में फिर से वृद्धि हुई है।

होम्योपैथी के तंत्र और सिद्धांत?

होम्योपैथी कुछ मुख्य सिद्धांतों पर आधारित चिकित्सा प्रणाली है, जिसे 18वीं शताब्दी के अंत में जर्मन डॉक्टर सैमुअल हैनीमैन ने विकसित किया था। इसके प्रमुख सिद्धांत हैं:

जैसा ठीक वैसा (सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटर): यह सिद्धांत बताता है कि जो पदार्थ एक स्वस्थ व्यक्ति में कुछ लक्षण पैदा करता है, वही पदार्थ अत्यधिक पतला होकर बीमार व्यक्ति के उन्हीं लक्षणों का इलाज कर सकता है। यानी एक ही तरह के लक्षणों को ठीक करने के लिए वही पदार्थ दिया जाता है।

न्यूनतम खुराक का नियम: होम्योपैथिक दवाएँ बार-बार पतली और हिलाई जाती हैं, जिससे माना जाता है कि उनकी ताकत बढ़ जाती है। जितनी अधिक पतली की जाती है, उतनी ही असरदार मानी जाती है, भले ही इसमें कोई सक्रिय रसायन न बचे।

वैयक्तिकरण: होम्योपैथी हर मरीज को अलग और खास मानती है। इलाज सिर्फ बीमारी पर नहीं, बल्कि व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक पहलुओं पर आधारित होता है। सही इलाज चुनने के लिए पूरे व्यक्ति का विस्तृत मूल्यांकन किया जाता है।

जीवन शक्ति: होम्योपैथी यह मानती है कि शरीर में एक महत्वपूर्ण ऊर्जा होती है, जो संतुलन और स्वास्थ्य बनाए रखती है। जब यह ऊर्जा असंतुलित हो जाती है, तो बीमारी होती है। होम्योपैथिक इलाज इस ऊर्जा को संतुलित करने में मदद करता है।

पोटेंटाइजेशन और सक्सेशन: दवाओं को बार-बार पतला और हिलाने की प्रक्रिया को पोटेंटाइजेशन कहते हैं। इससे दवा की ताकत बढ़ाने का दावा किया जाता है, जिससे दुष्प्रभाव कम होते हैं और इलाज का असर बढ़ता है।

लक्षणों की समग्रता: होम्योपैथी मरीज के सभी लक्षणों—शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक—को ध्यान में रखती है। इस समग्र दृष्टिकोण से सबसे उपयुक्त इलाज चुना जाता है।

पशु चिकित्सा में अनुप्रयोग

होम्योपैथी का उपयोग बड़े और छोटे दोनों तरह के जानवरों में कई बीमारियों के इलाज के लिए किया जा सकता है। यह हाल की चोटों, जैसे मोच, चोट, और कीड़े के काटने के लिए प्रभावी हो सकता है, जिससे दर्द और सूजन को कम या खत्म किया जा सकता है और उपचार प्रक्रिया तेज हो सकती है। इसका उपयोग आंत्रशोथ (दस्त), मसूड़े की सूजन, श्वसन रोग जैसी सूजन संबंधी समस्याओं के इलाज में भी किया जा सकता है, चाहे वे सामान्य उपचारों से ठीक हों या न हों। त्वचा की बीमारियाँ, संक्रमण, एलर्जी जैसी तीव्र और पुरानी समस्याएँ भी होम्योपैथी से ठीक की जा सकती हैं।

अगर सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए, तो यह प्रतिरक्षा से जुड़ी बीमारियों में भी मददगार हो सकता है। गठिया और स्पोंडिलोसिस जैसी पुरानी बीमारियों में भी होम्योपैथी कारगर हो सकती है, खासकर जब बीमारी के शुरुआती चरणों में हो। यहां तक कि कैंसर से होने वाले दर्द को कम करने में भी मदद मिल सकती है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

बड़े जानवरों, जैसे गायों और घोड़ों में भी, होम्योपैथी से तीव्र और पुरानी बीमारियों का इलाज किया जा सकता है। मवेशियों में स्तनदाह और घोड़ों में शूल जैसी बीमारियों में यह सहायक हो सकती है।

होम्योपैथिक दवाओं का इस्तेमाल आसान होता है, क्योंकि ये आमतौर पर गोलियों या तरल रूप में दी जाती हैं, जिन्हें जानवर की जीभ या मसूड़ों पर रखा जाता है और वे वहीं से अवशोषित हो जाती हैं। अगर ठीक से दिया जाए, तो होम्योपैथिक उपचार काफी सुरक्षित हैं और आमतौर पर कोई साइड इफेक्ट नहीं होता। हालांकि, अगर इसे गलत तरीके से दिया जाए या गलत इलाज चुना जाए, तो इसका कोई फायदा नहीं होता। इस कारण से, कुछ लोग होम्योपैथी को बेअसर मानते हैं।

गंभीर बीमारियों, जैसे मिर्गी या सूजन के मामलों में, सही होम्योपैथिक उपचार पारंपरिक इलाज जितना ही प्रभावी हो सकता है। लेकिन, ऐसी गंभीर बीमारियों में, उपचार का सही चुनाव और शरीर की प्रतिक्रिया को समझना जरूरी है। इसलिए, इन्हें केवल प्रशिक्षित और लाइसेंस प्राप्त होम्योपैथ की निगरानी में ही इलाज किया जाना चाहिए।

होम्योपैथिक उपचार पर नैदानिक अनुसंधान

होम्योपैथिक उपचार पर वैज्ञानिक शोध लंबे समय से जांच और बहस का विषय रहा है। कुछ अध्ययन इसके सकारात्मक परिणाम और संभावित लाभ दिखाते हैं, लेकिन कुल मिलाकर सबूत सीमित और अक्सर अनिश्चित होते हैं। शोधकर्ताओं ने विभिन्न स्थितियों में होम्योपैथी की प्रभावशीलता का परीक्षण करने के लिए नियंत्रित प्रयोग किए हैं, जिसमें इंसानों और जानवरों पर अध्ययन शामिल हैं। हालांकि, इन परीक्षणों में कुछ चुनौतियाँ होती हैं, जैसे उपचार का सही तरीके से परीक्षण करना और अत्यधिक पतले उपचारों के लिए सही प्लेसबो (नकली दवा) खोजना। इसके बावजूद, कुछ अध्ययनों में सकारात्मक परिणाम मिले हैं, खासकर कुछ तीव्र और पुरानी बीमारियों में। लेकिन होम्योपैथी के वास्तविक प्रभावों को समझने के लिए और अधिक अच्छे और सटीक शोध की जरूरत है, ताकि यह साबित हो सके कि यह प्लेसबो प्रभाव से अधिक है और स्वास्थ्य सेवा में इसका सही स्थान क्या हो सकता है।

निष्कर्ष:

पशु चिकित्सा में होम्योपैथी एक दिलचस्प और चर्चा का विषय बनी हुई है। "जैसा इलाज वैसा" और शक्तिकरण के सिद्धांतों पर आधारित यह पद्धति जानवरों की स्वास्थ्य समस्याओं का समग्र और व्यक्तिगत तरीके से इलाज करने का प्रयास करती है। कुछ पालतू जानवरों के मालिक और चिकित्सक इसके अच्छे परिणामों की बात करते हैं, लेकिन इसके प्रभाव के लिए वैज्ञानिक प्रमाण स्पष्ट नहीं हैं, जिससे चिकित्सा जगत में इस पर संदेह बना रहता है। फिर भी, होम्योपैथी को पूरक या सहायक चिकित्सा के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। पालतू जानवरों के मालिकों को सलाह दी जाती है कि वे किसी भी वैकल्पिक उपचार से पहले होम्योपैथी में प्रशिक्षित विशेषज्ञों से परामर्श लें और जब आवश्यक हो, पारंपरिक चिकित्सा को प्राथमिकता दें।